

Dr. Rajiv Ranjan Pandey, Assistant Professor,  
PHILOSOPHY, RBGR COLLEGE, Maharanjan, Siwan

### उचित और अनुचित

'Right' शब्द लैटिन शब्द 'Rectus' से व्युत्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है - ठीक अथवा नियम के अनुकूल। जिसका अर्थ है - वह अथवा प्रतिकूल। किसी नियम के अनुकूल या प्रतिकूल रहने पर हम किसी शिष्टांत या व्यवहार को सत (उचित) या असत (wrong) अनुचित कहते हैं। सत या उचित द्वारा शुभ की प्राप्ति होती है और असत या अनुचित द्वारा अशुभ की प्राप्ति। नैतिक नियमों को मापदंड मानकर ही किसी आचरण को उचित और अनुचित घोषित किया जाता है। ये नैतिक नियम देहा, काल और पात्र के अनुसार बदलते रहते हैं। सत और असत यानि उचित और अनुचित, शुभ व अशुभ कर्मों से संबंधित हैं।

सिद्धांत के अनुसार उचित की दो कोटियाँ हैं - आत्मनिष्ठ (Intrinsic) और वस्तुनिष्ठ। जो स्वयं से निश्चित एवं निर्भर है और जो दूसरों के अनुसार भी सत है। उसे वस्तुनिष्ठ सत कहते हैं। वस्तुनिष्ठ सत व्यक्ति पर निर्भर नहीं रहता, इसमें कर्म का परिणाम सत हो जाता है। ग्रीन का कहना है कि "प्रयोजन की अच्छाई और बुराई के परिणाम सत-असत पर निर्भर है, उचित आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ का गैर नहीं किया जा सकता। आत्मनिष्ठ सत में वस्तुनिष्ठ सत भी है। किंतु ग्रीन का मत हीन नहीं जान पड़ता।

नैतिक नियम या मापदंड के आधार पर मानव-आचरण का औचित्य या अनीचित्य निर्धारित होता है। इन नैतिक नियमों के ज्ञान ही चेतना सदैव नहीं पाई जाती। किसी मनुष्य को इन नियमों का स्पष्ट ज्ञान तो किसी अन्य मनुष्य को इनका अस्पष्ट



AUGUST '13

ज्ञान रहता है। सामान्यतः मनुष्य के आचरण का नैतिक  
कर देने के बाद भी इस निर्णय के आधारस्वरूप नैतिक  
नियमों की स्पष्ट चेतना नहीं रहती। इसका स्पष्ट ज्ञान  
दिलाना ही नीतिशास्त्र का मुख्य लक्ष्य है।  
नैतिक नियमों की चेतना परिवर्तनशील  
रहती जा सकती है। देश-काल और परिस्थितियों के अनुसार  
नैतिक नियम भी बदलते रहते हैं। इन नियमों पर आश्रित  
उचित और अनुचित कर्मों के विचार भी बदलते रहते हैं।  
इन नियमों में परिवर्तन होता रहता है। कोई कर्म जो एक स्थान  
और एक समय में उचित या सत है, वहीं दूसरे स्थान  
और दूसरे काल में अनुचित या असत प्रमाणित हो जाता है।  
प्रत्येक नियम के मूल में एक लक्ष्य छिपा  
रहता है। लक्ष्यहीन नियम वस्तुतः नियम नहीं कहा जा सकता।  
नैतिक नियम भी उद्देश्यपूर्ण होते हैं। परमशुभ या निःश्रेयस  
की प्राप्ति ही नैतिक नियमों का लक्ष्य माना गया है। वहीं  
आचरण उचित है, जो नैतिक नियमों के अनुकूल अर्थात्  
सर्वोच्च शुभ की प्राप्ति में सहायक हो। अनुचित आचरण  
वह है, जो नैतिक नियम के विरुद्ध हो या निःश्रेयस सर्वोच्च  
शुभ की प्राप्ति में सहायता न मिले। इससे उचित एवं  
अनुचित का अविच्छेद संबंध शुभ और अशुभ कर्मों का  
स्पष्ट दीख पड़ता है।

नीतिशास्त्र व्यवहार की नैतिकता का विश्लेषण  
है। यह कर्मों के सत-असत भाव का, नैतिक शुभाशुभ का,  
अच्छे-बुरे कर्मों में प्रवृत्त नैतिक कर्तव्यों की योग्यता-अयोग्यता  
का, समाज में रहनेवाले व्यक्तियों के अधिकार, कर्तव्य-चरित्र  
का, स्वाधीनता एवं उत्तरदायित्व का विवेचन करता है। नैतिक  
चेतना में सम्मिलित इन्हीं आधारभूत प्रत्ययों का सम्यक  
विवेचन इसका लक्ष्य है। इस प्रकार मौलिक नैतिक प्रत्यय ये हैं-  
1. उचित व अनुचित 2. शुभ-अशुभ 3. सर्वोच्च शुभ 4. कर्तव्य और  
दायित्व 5. अधिकार और कर्तव्य 6. सद्गुण और कर्तव्य 7.  
शुभ और पाप 8. सद्गुण-पुण्य 9. कर्तव्यपरायणता और  
अनिकर्तव्यपरायणता